प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सीखना कुछ अवलोकन

कमलेश चंद्र जोशी

स्कूल में लिखना-पढ़ना सिखाना सबसे बुनियादी कौशल हैं और ये पूरे पाठ्यक्रम को सीखने, समझने का आधार बनते हैं। लेख में एक बुनियादी कौशल 'लिखना' सिखाने के बारे में शिक्षकों के आम दृष्टिकोण की चर्चा की गई है। साथ ही बच्चों के कुछ लेखन नमूनों की मदद से यह बताने का प्रयास किया गया है कि लेखन को समृद्ध बनाने के लिए उनके लेखन को कैसे समझा जाए और व्यक्तिगत रूप से बच्चों से क्या चर्चा की जाए? इस प्रक्रिया के अलावा लेखक ने लेखन में विषयवस्तु की स्पष्टता और रचनाशीलता को पुष्ट करने के लिए कुछ और भी अनुभव-आधारित महत्त्वपूर्ण तरीक़े सुझाए हैं। सं.

विद्यालय भ्रमण के दौरान कभी-कभी कुछ शिक्षकों से उनके स्कूलों में बातचीत होती है। वे बच्चों के लेखन कार्य को भी दिखाते हैं और बताते हैं कि बच्चे अपने मन से अच्छा लिख लेते हैं। आगे वे यह भी बताते हैं कि वे अपनी कक्षाओं में बच्चों को लिखने के मौक़े भी देते हैं और बच्चों से कहानियाँ, अनुभव आदि लिखवाते हैं। इस बातचीत में कहीं इस बात का जवाब नहीं मिल पाता कि अच्छा लिखने को कैसे समझें। जब उनसे पूछते है कि बच्चों को लिखने का मौक़ा देने से उनके पढ़ने-लिखने में क्या प्रगति देखने को मिलती है? और उन्हें बच्चों के लेखन के बारे में क्या बातें समझ में आती हैं? तब उनका कहना होता है कि बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति बढ़ रही है और बच्चे शुरुआत में कुछ ही वाक्य लिखते थे, अब ज़्यादा वाक्य व पैराग्राफ़ लिख रहे हैं। यहाँ महसूस होता है कि कक्षा में बच्चों को लिखना सिखाने पर योजनाबद्ध व सुविचारित ढंग से काम करने की ज़रूरत है। इसके साथ इस बात की भी आवश्यकता महसूस होती है कि बच्चों की लिखने की प्रगति पर एक समझ के साथ ग़ौर करने और उसे पाठ्यक्रम से जोड़कर देखने पर भी समझ बनाने की ज़रूरत है।

कक्षा में बच्चों के लिखने पर शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह भी महसूस हुआ कि वे अभी बच्चों के लेखन को एक 'प्रक्रिया' के रूप में देखने की बजाय शायद मात्र उत्पाद के रूप में देख रहे हैं। यह इस रूप में भी देखा जा रहा है कि बच्चों ने जो लिख लिया



चित्र : शुभम लखेरा

वह अपने-आप में ठीक है, अब इसपर कोई सुधार करने की गुंजाइश नहीं है। यहाँ शिक्षकों से बात की जाती है कि बच्चों के लेखन को एक 'प्रक्रिया' के रूप में देखें और यह समझें कि बच्चे अभी लिखना सीख रहे हैं। इसमें उनकी किस तरह से मदद की जाए, इसपर विचार करें और लेखन को अच्छे-से समझें।


चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

यह भी देखने को मिलता है कि जब शिक्षक साथी बच्चों के लिखे को देखते हैं तो अकसर ध्यान केवल वर्तनी व व्याकरण की अशुद्धियों पर ही जाता है। जबकि यह ध्यान देने की ज़रूरत है कि उसकी विषयवस्तु व उसके संगठन को भी समझने का प्रयास किया जाए। उसके अनुरूप उन्हें फ़ीडबैक देने का प्रयास किया जाए। इसमें इन बातों का ध्यान रखा जाए कि बच्चों ने इसे किसके लिए लिखा है? और वे किसके लिए लिख सकते हैं? किन जगहों पर दोहराव हो रहा है? उनके लेखन में कहाँ-कहाँ पर बात स्पष्ट नहीं हो रही है? और कहाँ पर इसे और बेहतर बनाया जा सकता है? आदि।

एक बार एक प्राथमिक शाला में जाना हुआ। वहाँ के शिक्षक साथी हमारे अच्छे परिचित हैं। बच्चों के साथ काफ़ी मेहनत से काम करते हैं। उनके विद्यालय में अधिकतर अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चे पढ़ते हैं और वे तीसरी व चौथी कक्षा के बच्चों के साथ काम करते हैं। चौथी कक्षा में क़रीब बाईस बच्चे नामांकित हैं। उस दिन कक्षा में उन्नीस बच्चे उपस्थित थे। शिक्षक से औपचारिक बातचीत के बाद मैं चौथी कक्षा में बैठ गया। उन्होंने बच्चों की हाज़िरी लेने के उपरान्त उन्हें लिखने का कार्य दिया। उन्होंने एकलव्य द्वारा प्रकाशित बच्चों की चित्रात्मक पुस्तक *चूहे को मिली पेंसिल* से दो वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखे– एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'...।


चित्र : शुभम लखेरा

आगे उन्होंने बच्चों से कहा कि आप इन वाक्यों के आधार पर एक कहानी बनाओ। इस तरह से लिखना बच्चों के लिए नियमित बात थी क्योंकि वे अकसर ही लिखते थे। इसके प्रमाण कक्षा में भी मिल जाते थे। उनकी रचनाएँ एक फ़ाइल

में भी संकलित थीं और कुछ को एक चार्ट पर चिपकाकर अख़बार के रूप में कक्षा में लगाया गया था। जब शिक्षक ने यह कार्य बच्चों को दिया तो मेरे मन में विचार आया कि अगर वे कक्षा में बच्चों से इन वाक्यों पर थोड़ी बातचीत कर लेते तो शायद बच्चों को आगे सोचने-विचारने के कुछ और संकेत मिल जाते। हो सकता है कि इसमें शिक्षकों के मन में यह दुविधा रहती हो कि बच्चों को लिखने के बारे में विचार विकसित करने के लिए उनसे कुछ बात की जाए या उन्हें स्वतंत्र ही छोड़ दिया जाए कि वे अपने-आप लिखें। पर मेरा मानना है कि बच्चे अभी लिखना सीख रहे हैं इस कारण बात करने से उन्हें लिखने व विचारों को संगठित करने पर और समझ मिल जाती है। नहीं तो यह देखने को मिलता है कि कुछ बच्चे कुछ ही पंक्तियों के बाद अटक जाते हैं या अपने साथियों का ही लिखा हुआ उतार देते हैं। वैसे भी हम उनके विचार जानने के लिए उनसे बात कर ही रहे हैं और लेखन को एक प्रक्रिया के रूप में देख रहे हैं। हाँ, यह ज़रूर हो सकता है कि कभी-कभार उनसे बिना संकेत दिए हुए लिखवाया जाए। यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह अपने बच्चों के स्तर को देखते हुए इस बात को तय करें कि कब एवं कैसे लिखवाएँ? साथ ही यह कि बच्चों के लिखने का टास्क किस प्रकार का है? कभी-कभी ऐसा होता है कि टास्क में ही कुछ संकेत दिए होते हैं। उसके आधार पर भी बच्चे लिख सकते हैं।

फिर कक्षा पर वापस लौटते हैं। थोड़ी ही देर में सभी बच्चों ने कहानी को अपने अनुभवों व कल्पना से पूरा किया और शिक्षक ने कापियाँ जाँचकर हस्ताक्षर भी कर दिए। उन्होंने बच्चों से कहा, 'आपने अच्छा लिखा है।' और बात उससे ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पाई। परन्तु मैं बच्चों की रचनाओं को थोड़ा गहराई से समझना चाहता था कि इन बच्चों ने क्या लिखा है? ऐसा क्यों लिखा है? और इसे बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? इस कारण मैंने शिक्षक से कहा कि अगर वे बच्चों की लिखी हुई कहानियाँ संकलित कर मुझे दे दें तो अच्छा रहेगा। इस तरह बच्चों की रचनाएँ मैंने ले लीं जिसके कुछ उदाहरण निम्नवत हैं (यहाँ वर्तनी में सुधार कर प्रस्तुत किया जा रहा है) :

एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'। चूहे ने ग़ुस्से में पेंसिल तोड़ दी। चूहा दूसरी पेंसिल लाया। चूहे ने एक चींटी बनाई।

-फ़िज़ा

एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'। चूहे ने कहा मुझसे चित्र नहीं बनेगा। पेंसिल ने कहा जाओ एक काग़ज़ ले आओ। जाते-जाते चूहे को रास्ते में एक चोर मिला। उसने कहा तुम कहाँ जा रहे हो। एक काग़ज़ लेने जा रहा हूँ। उसमें चित्र बनाऊँगा। चूहा कोशिश कर रहा था।

-अंजुम

एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'। उसने कहा मैं तो जानवर हूँ, मैं लिखना जानता नहीं हूँ। पेंसिल ने कहा जैसे तुम्हें बनाना हो बना लो। मैं कुछ नहीं कहूँगी। चूहा मान गया। ठीक है फिर तुम्हें अच्छे-से बनाना आ जाएगा। तुम बहुत अच्छा बनाते हो। मेरी सलाह है। तुम्हारी बहन है? चूहे ने कहा मेरे माँ-बाप भी नहीं हैं। पेंसिल ने कहा मेरे घर रहोगे। वह कहने लगा मुझे डाँटोगी तो नहीं। चूहा ख़ुश हो गया। आप कितने अच्छे हो। खाना खाओगे, चलो बहुत भूख लगी है। खाना खाकर पढ़ोगे। चूहा कहने लगा है ठीक है।

-इरम समाँ

एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'। चूहे ने पेंसिल से चित्र बना दिया। पेंसिल ने कहा मुझे सही नहीं लग रहा है। दुबारा बनाओ। चूहे ने कहा मुझे ये ठीक लग रहा है। पेंसिल ने कहा मुझे पकड़कर चलाओ। चूहे ने कहा मुझे पेंसिल पकड़ना नहीं आता। पेंसिल ने कहा मैंने तो तुम्हें पकड़ना बता दिया। चूहे ने पेंसिल को पकड़कर पेंसिल को तोड़ दिया। पेंसिल बोली तुमने मुझे क्यों तोड़ दिया। क्योंकि तुमने मुझे चित्र बनाने को कहा।

–गुलाबजहाँ

एक चूहा था। उसे एक पेंसिल मिली। चूहे ने पेंसिल को कुतरना चाहा। पेंसिल ने कहा, 'मुझसे एक चित्र बनाओ'। पेंसिल बोली तुम्हें चित्र बनाना आता है। पेंसिल बोली मुझसे नहीं आता है। पेंसिल बोली जैसा चाहे बना दो। चूहा बोला सही है। अच्छा तुम बताओ मुझे तुम कुतरना क्यों चाहते थे। चूहा बोला मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिलता। पेंसिल बोली मुझे भी नहीं मिलता। बच्चे मुझसे ही काम करते हैं। चूहा बोला मैं तो कपड़े और चीज़ कुतर लेता हूँ। जब मुझे कोई पाल लेता तो मुझे रोटी भी मिल जाती तो मैं खा लेता। पेंसिल बोली मुझे देर हो रही है। अब मैं चलती हूँ। चूहा बोला ठीक है फिर मिलेंगे।

–गुलचमन

घर ले जाकर मैंने इन कहानियों को दो-तीन बार पढ़ा और इन रचनाओं में बच्चों के प्रयास को थोड़ी गहराई से देखने पर उनके लेखन में उनके मनोभाव और कल्पनाशीलता दिखाई दी। उनकी कक्षा की बातों की झलक दिखाई पड़ी। अगर उसपर थोड़ा ग़ौर करें तो समझ में आता है कि यदि कक्षा में बच्चों को स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने व लिखने को कहा जाता है तो वे यह कहते हैं कि हमसे नहीं बनेगा। यह कई बार अनुभव हुआ है और ऐसा भी लगा कि कुछ बच्चे इससे थोड़ा खीझ जाते होंगे। यही बात उनके लेखन में दिखाई पड़ती है, जब चूहा कहता है, मुझसे नहीं बनेगा। कहीं चूहा पेंसिल भी तोड़ देता है। यह बातें हमें फ़िज़ा, अंजुम, गुलाबजहाँ,



चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

गुलचमन के लेखन में दिखाई पड़ती हैं। हमें इसी तरह यह बात भी दिखाई देती है कि अकसर कक्षा में शिक्षक बच्चों से कहते हैं– जैसा बने, वैसा बना लो। यही बात बच्चों के लेखन में भी दिखाई दी। जैसे– इरम का लेखन, जिसमें वह चूहे की तरफ़ से लिखती है कि मुझे बनाना नहीं आता तो पेंसिल उसे कहती है जैसा भी बने बना लो। इस तरह समझ में आता है कि बच्चे किस तरह से कक्षा या घर के अनुभवों को अपने लेखन में आसानी से ले आते हैं और वे अनुभव वाक्य के रूप में आ जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि बच्चे भाषा को कैसे पकड़ते हैं और उनका मस्तिष्क किस तरह सक्रिय रहता है। इसी तरह यह भी देखने को मिलता है कि बच्चों के दिमाग़ में भी अच्छे चित्र की एक समझ है। जो चित्र सुघड़, साफ़ सुथरा और वास्तविक जैसा होगा, वह अच्छा चित्र होगा। तभी तो गुलाबजहाँ के लेखन में जब चूहा चित्र बनाता है तो पेंसिल कहती है मुझे सही नहीं लग रहा, दुबारा बनाओ। परन्तु चूहा कहता है, मुझे ये ठीक लग रहा है। इस तरह द्वन्द्व की बातें भी दिख जाती हैं। बच्चों के लेखन में हम यह भी ग़ौर कर सकते हैं कि कक्षा में पढ़ी गई किताबों के वाक्य, आसपास घटी घटनाएँ, चरित्र भी उनके लेखन में दिख जाते हैं। जैसे– फ़िज़ा का चूहा चींटी बनाता है। इरम के लेखन में चूहा कहता है– मेरे माँ-बाप नहीं हैं। इरम और गुलचमन ने लिखने का अच्छा प्रयास किया। उनके लेखन में पात्रों के बीच बातचीत को लिखा गया है।

इस प्रकार की कक्षा प्रक्रिया से यह भी महसूस हुआ कि बच्चों से लेखन कार्य करवाने से पूर्व अगर शिक्षक कुछ बातचीत कर लेते तो शायद बच्चों को कहानी पर और सोचने का मौक़ा मिलता। इस तरह से उन्हें लिखने की रूपरेखा बनाने में मदद मिल जाती। यह बहुत ज़रूरी होता है जिसमें बच्चों के अनुभव व विचार सुनने को मिलते हैं और उसपर बात हो पाती है। दूसरी बात यह है कि यदि बच्चों के लिखे हुए पर कक्षा में बातचीत होती तो भी बच्चों को सोचने-समझने का मौक़ा मिलता जो उनके आगे के लिखने में मददगार होता। तीसरी बात अगर बच्चों के लिखे हुए पर उन्हें एक फ़ीडबैक दिया जाता तो बच्चों को अपने लेखन को फिर से देखने का मौक़ा मिलता। सम्पादन की बात होती। फिर शायद वे आगे और बेहतर लिख पाते।


चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

इस तरह से इस क्रम में लेखन पूर्व संवाद, लेखन के दौरान इनपुट, लेखन पर संवाद, फ़ीडबैक एवं सुधार, पुनर्लेखन व सम्पादन की बात हो जाती। मुझे लगता है कि इस तरह के नियमित अभ्यासों से बच्चों को लिखने की इन प्रक्रियाओं की जानकारी मिलती और उन्हें एहसास होता कि वे अपने लिखे हुए को और बेहतर बना सकते हैं। इसमें कुछ और जोड़ सकते हैं या कुछ घटा सकते हैं।

अब हम बच्चों को उक्त उदाहरणों पर दिए जाने वाले सम्भावित फ़ीडबैक के बिन्दुओं को समझने का प्रयास करते हैं :

फ़िज़ा ने लिखा, चूहे ने ग़ुस्से में पेंसिल तोड़ दी। यहाँ यह स्पष्ट नहीं हुआ कि उसने पेंसिल क्यों तोड़ी? फिर उसने लिखा, चूहा दूसरी पेंसिल लाया। वह दूसरी पेंसिल क्यों लाया? जब उसने पहली पेंसिल तोड़ दी। फिर चूहे ने चींटी

बनाई। चींटी कैसे बनाई? उससे आगे क्या हुआ? ये बातें फ़िज़ा और लिखती तो उसे अपने लेखन को और सुगठित करने में मदद मिलती।

अंजुम ने अन्त में यह लिखा कि चूहा कुछ कोशिश कर रहा था। इसमें कोशिश करने के बाद आगे क्या हुआ? इसपर अंजुम को सोचने के लिए कहा जा सकता है।

इरम ने जो कहानी बनाई उसमें यह स्पष्ट नहीं होता कि चूहे ने चित्र बनाया कि नहीं। उसने यह बात नहीं लिखी। उसका इस ओर ध्यान दिलाया जा सकता था। उसमें माँ-बाप भी आ गए। उस से इन बातों को भी स्पष्ट करने के लिए बात करनी पड़ेगी जिससे उसके लिखे हुए में एक अर्थ निर्मित हो।

गुलाबजहाँ से यह बात की जा सकती है कि जब चूहे ने पेंसिल का चित्र बना दिया तो उसने ऐसा क्या बनाया जो पेंसिल को ठीक नहीं लगा, जबकि चूहे को यह ठीक लग रहा था। तो क्या देखकर चूहे ने कहा कि उसे ठीक लग रहा है? इस तरह से वह आगे और सोच सकती है और लेखन को बेहतर बनाने का प्रयास कर सकती है।

गुलचमन ने लिखा, पेंसिल बोली मुझे नहीं आता है। तब आगे उसने क्या बनाया? आगे कुतरने की बात भी आई। उससे इन दोनों बातों को स्पष्ट करने के बारे में बात करनी पड़ेगी। इस तरह से अन्य बच्चों से भी उनके लिखे हुए पर बातचीत की जा सकती है। अकसर होता यह है कि बच्चों से लिखवाने का काम तो कक्षा में किया जाता है पर उसपर हम उनसे बात नहीं कर पाते, समालोचनात्मक फ़ीडबैक नहीं दे पाते, न ही हम उनके लेखन को सुधार के नज़रिए से देख पाते हैं।

कुल मिलाकर कहने का अर्थ यह है कि हम बच्चों से लिखने के उपरान्त इस तरह से भी बात करें जिससे उन्हें आगे और सोचने का मौक़ा मिले और उनके लेखन में सुधार हो व एक सुगठता दिखाई पड़े। बच्चों के लेखन में सुधार के अन्तर्गत वर्तनी व व्याकरण की बात भी आती है। शायद इसपर हमारा ध्यान सबसे पहले जाता भी है। इनपर भी बच्चों से बात कर उसमें सुधार के प्रयास किए जा सकते हैं परन्तु मूलभूत सुधार विषयवस्तु की स्पष्टता व कल्पनाशीलता को बढ़ाने के होने चाहिए। वर्तनी व व्याकरण में सुधार की बात सबसे अन्त में आती है, और वर्तनी का सुधार पढ़ने-लिखने के सतत क्रम में बच्चे धीरे-धीरे स्वयं कर लेते हैं।

इसके साथ ही इस बात पर पूरी सहमति है कि उन्हें लिखने के विविध मौक़े देने चाहिए और उन्हें यह एहसास दिलाना चाहिए कि वे किसके लिए और क्यों लिख रहे हैं। साथ ही यह भी समझने की आवश्यकता है कि बच्चों के लिखने में समृद्धता तभी आएगी जब वे कक्षा में नियमित रूप से पढ़ेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों के लिखने के लिए नए विचार देने और उनकी शब्दावली को समृद्ध करने के लिए नियमित तौर पर कक्षा में उन्हें स्वतंत्र रूप से पढ़ने का मौक़ा दिया जाए। शिक्षक भी समझें कि पढ़ना और लिखना आपस में जुड़ी प्रक्रियाएँ हैं जो कि एक दूसरे को समृद्ध करती हैं।

अन्त में ज़रूरी बात यह भी लगती है कि प्राथमिक कक्षाओं में आमतौर पर यह देखने को नहीं मिलता है कि शिक्षक भी किसी चित्र, घटना या अनुभव पर ख़ुद लिखकर बच्चों को दिखाएँ। ऐसा करने से भी बच्चों को नए विचार मिलते हैं और लिखने की समझ बढ़ती है। इसी तरह, शिक्षक बच्चों के साथ कुछ अच्छे लेखन के नमूने भी दिखा सकते हैं। उसपर चर्चा कर सकते हैं कि इस लेखन में क्या अच्छा लग रहा है। बच्चों के साथ इस तरह के प्रयासों से ही बच्चों को लिखना सिखाने में और जीवन्तता आ पाएगी।

कमलेश चंद्र जोशी प्राथमिक शिक्षा से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों– शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता आदि में गहरी रुचि। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में कार्यरत।
सम्पर्क : kamlesh@azimpremjifoundation.org